३२: सत्यता- ८: सत्य ही ऐश्वर्य है |

दिनांक -१०/१२/२०११

सत्य ही ऐश्वर्य है | ऐश्वर्य अपने स्वरूप में सह-अस्तित्व में अनुभव है क्योकि मानव जात सहअस्तित्व में अनुभव के पहले सुख, शांति, संतोष, आनंद का प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सकता | इसलिए सहअस्तित्व रुपी ऐश्वर्य अनुभूत होना ही मानव परम्परा का वैभव है | वैभव ही ऐश्वर्य है | उद्भव, विभव, प्रलय का परिकल्पना आदिकाल से है | सर्वाधिक समय तक, सब समय तक वैभव पहचानने की इच्छा भी है | मानव का इतिहास में यह स्पष्ट होता है | यह पूरा बात सुख, समाधान के साथ जुड़ा है | समाधान, समझदारी के साथ जुड़ा है | इसे भली प्रकार से अनुभव किया गया है, प्रयोग किया गया है व प्रमाणित किया गया है | इस क्रम में अर्थात जागृति के क्रम में मानव का होना पता लगता है और जागृत होने का सम्भावना बना रहता है | तभी जागृति क्रम में रहता है | जागृति क्रम में ही सम्पूर्ण समस्यायों का सामना करना पड़ता है | समाधान की अपेक्षा में सम्पूर्ण समस्याएं निर्मित हुईइ चाहे वह राजनीतिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या व्यवहारिक हो -इन चारों बातों के आधार पर जागृति का ही पहचान है | जागृति समाधान का पहचान है | इस क्रम में मानव का अध्ययन होने से सम्भव है कि मानव अपनी मंजिल तक पहुँच जाय |

जागृति क्रम में मानव अनेकों प्रयोग किया | रहस्यमयी महिमा के साथ, प्रत्यक्ष रुपी महिमा के साथ | रहस्यमयी महिमा के साथ किया गया प्रयोगों को आदर्शवाद कहा गया तथा आदर्शवाद के रूप में पहचाना गया | प्रत्यक्ष रूप में पहचानने के लिये जितना भी प्रयोग किया गया उसका नाम भौतिकवाद है | आदर्शवादी विधि से या उपदेश विधि से जितना प्रयोग हुआ उसका परम्परा बना नहीं | भौतिकवादी विधि से जितना भी प्रयोग हुआ वह सभी प्रयोग मानव का अध्ययन करने में असमर्थ रहा | मानव का अध्ययन सूत्र व्याख्या न होने की स्थिति में मानव को मानव समझने का कोई आधार ही नहीं बनता | इसी सत्यतावश विकल्प प्रस्तुत हुआ |

विगत के अनुसार मानव का अध्ययन को विकास क्रम, विकास में किया गया है | इस अध्ययन के आधार पर विकास क्रम में मानव जीने का प्रयास किया है, जिसमें से विकास क्रम में जीव चेतना में जिया है तथा जीव, जानवरों से अच्छा जीने के लिये प्रयत्न किया, उसमें सफल हुआ | इसी सफलता को लेकर विकास या जागृति कह रहे हैं | जीवों से अच्छा जीना पर्याप्त नहीं हुआ क्योंकि मानव में अपराध प्रवृत्ति ही भ्रम प्रवृत्ति के रूप में गण्य हुआ | भ्रम और अपराध दोनों मानव में स्वीकृत होना नहीं पाया जाता है | इसका परीक्षण भली प्रकार से किया गया है | जैसा विविध प्रकार से जो अपराध करते हैं उनसे अपराध करने का कारण पूछा, तो उनके उत्तर में भाषा मिला “मजबूरी है” | मजबूरी जीने के अर्थ को प्रस्तुत नहीं करता | जीने के अर्थ के विधि को सोचने पर पुनः विकल्प विधि में ही आते हैं | विकसित चेतना में जीना ही विकल्प है | विकसित चेतना अपने स्वरूप में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में परिगणित होता है | परिगणित होने का तात्पर्य परीक्षणपूर्वक गणित होना | इन सभी बातों का परीक्षण करने पर मानव का आचरण अनुभवमूलक विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही है | अनुभवमूलक विचार विधि से यह पाया जाता है कि नियम, नियंत्रण, संतुलन,

न्याय, धर्म, सत्पूर्वक जीना ही प्रमाण है | व्यवहार रूप में जीने का प्रमाण स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयपूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में वैभव होना पाया जाता है | यह अध्ययन एवं अनुभव मूलक प्रमाण विधि से स्पष्ट है | विकसित चेतना क्रम में ज्ञान एवं आचरण, अनुभव मूलक विधि से विकसित चेतना का प्रमाण मिलता है | अनुभव के बिना ज्ञान एवं आचरण में त्रुटी भावी है | इसीलिए इसे आचरणपूर्णता कहा |

वैभव का स्वरूप परम्परा के रूप में ही होता है | यही निरंतरता का आधार है | ऐसा निरंतर वैभव ही मानव के लिये समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में वैभव का,परम्परा का आधार है | इसलिये इसे ऐश्वर्य नाम दिया है | ऐश्वर्य सम्पन्न परम्परा ही ईश्वरीयता सम्पन्न परम्परा है | ऐश्वर्य सम्पन्न परम्परा को ही ईश्वर सम्पन्न परम्परा नाम दिया है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत